संज्ञा प्रकरण Could. –

नाद - मधुर ध्वनि को कहते हैं।

घोष – वर्णों के उच्चारण में जो गूँज होती है, उसे घोष कहते हैं।

अघोष – जो वर्ण गूँजते नहीं हैं, उन्हें अघोष कहते हैं।

अल्पप्राण – जिन वर्णों के उच्चारण में थोड़ा (अल्प) प्राणवायु का उपयोग होता है, वे अल्पप्राण कहलाते हैं।

महाप्राण – वर्णों के उच्चारण में अधिकतम प्राणवायु का उपयोग महाप्राण कहलाता है।

कादय इति – इसके अन्तर्गत 'क' से 'म' तक के वर्ण स्पर्श कहलाते हैं।

अच् का अर्थ स्वर है।

'क' और 'ख' के उच्चारण में पहले जो आधे विसर्ग के समान उच्चरित होता है, उसे जिह्वामूलीय कहते हैं।

'प' और 'फ' के उच्चारण के बाद विसर्ग के समान आनेवाली ध्वनि को उपध्मानीय कहते हैं।

'अं' एवं 'अः' में 'अ' के आनेवाली '◌ं' ध्वनि को अनुस्वार और अ के बाद आनेवाली 'ः' ध्वनि को विसर्ग कहते हैं।

(11) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः – 1|1|69

यह संज्ञासूत्र है। किसी भी प्रत्यय का विधान सूत्र द्वारा होता है। अप्रत्यय का अर्थ है, जिसका विधान सूत्र द्वारा नहीं हुआ हो। सूत्र का अर्थ है प्रत्यय भिन्न अण् और उदित सवर्ण का बोधक होता है। यथा-अण् से अ इ उ ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल वर्णों का बोध होता है। इसके अतिरिक्त अण् से अ, इ, उ का भी बोध होता है।

(12) परः संनिकर्षः संहिता 1|4|109 –

यह संज्ञासूत्र है। यदि वर्णों की अत्यन्त निकटता होती है तो उसकी संहिता संज्ञा होती है। 'पर' शब्द 'अत्यधिक' अर्थ में प्रयुक्त है। 'सन्निधि' का अर्थ

Scanned with CamScanner

'निकटता' है। यथा - दध्यानय - इस रूप में दधि शब्द के 'इ' का आनय के 'आ' अत्यधिक निकटता के कारण उसकी संहिता संज्ञा हुई। 'इको यणचि' से इ का य् होकर दध्यानय बना।

वर्णों को परस्पर मिला देना ही संहिता है। दूसरे अर्थों में 'संहिता' 'संधि' का ही स्वरूप है।

13 हलोऽनन्तरा संयोगः - 1।1।7

यह हल् संज्ञा विधायक सूत्र है। सूत्र का अर्थ है जब दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण परस्पर मिल जाते हैं तो उसे संयोग कहते हैं। इसमें व्यञ्जन का स्वररहित होना आवश्यक है, पूर्ण व्यञ्जन वर्ण का संयोग नहीं होता।

यथा - हस्त - स् इ स्वर रहित है तब उसका ह और त के साथ संयोग होकर हस्त बना।

(14) ~~सुप्तिङन्तं पदम्~~

सुप्तिङन्तं पदम् - 1।4।14

यह पद संज्ञा विधायक सूत्र है। सूत्र का अर्थ है सुप् और तिङ् प्रत्यय से अन्त वाले अन्त होने वाले शब्द पद कहलाते हैं। सुप् के अन्तर्गत प्रथमा की 'सु' औ, जस् से प्रारंभ होकर सप्तमी बहुवचन में आनेवाले सुप् तक कुल इक्कीस प्रत्यय हैं एवं तिङ् के अन्तर्गत परस्मैपद के 'तिप्' प्र०पु० एक० से आत्मनेपद के उत्तमपुरुष बहु० में आनेवाले 'महिङ्' को गिनते हैं।

यथा - सुप् - रामः - राम + सु।

पठति - √पठ् + तिप्।

Scanned with CamScanner